



# माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों का तुलनात्मक अध्ययन

समर बहादुर यादव

शोध छात्र, मेजर एस.डी. सिंह विश्वविद्यालय, फर्रुखाबाद

डॉ. चंचला देवी सिंह

सहायक आचार्य, मेजर एस.डी. सिंह विश्वविद्यालय, फर्रुखाबाद

लेख विवरण

सारांश

शोधपत्र

प्राप्ति तिथि: 14/03/2026

स्वीकृति तिथि: 20/03/2026

प्रकाशनतिथि: 31/01/2026

मुख्य शब्द: व्यक्तित्व कारक, 16 पी.एफ. (16 PF), माध्यमिक स्तर, किशोर

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य प्रयागराज मण्डल के माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व कारकों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। शोध में वर्णनात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श (Sample) के रूप में प्रयागराज और कौशाम्बी जनपदों के 20 माध्यमिक विद्यालयों से कक्षा-11 के कुल 1200 विद्यार्थियों (600 छात्र एवं 600 छात्राएँ) का चयन बहुस्तरीय स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया। आंकड़ों के संग्रहण हेतु आर.बी. कैटल द्वारा निर्मित '16 पी.एफ. प्रश्नावली (भारतीय अनुकूलन) का उपयोग किया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन और t-अनुपात जैसी सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया गया। अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट होता है कि कुल 16 व्यक्तित्व कारकों में से केवल चार कारकों, मिलनसारिता (A), संवेगात्मक स्थिरता (C), चिंता/असुरक्षा (O) और आत्मनिर्भरता (Q2) में छात्र एवं छात्राओं के मध्य 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया। इन चारों कारकों में छात्राओं का मध्यमान छात्रों से अधिक रहा, जो यह दर्शाता है कि छात्राएँ अधिक स्नेही, संवेगात्मक रूप से स्थिर होने के साथ-साथ अधिक चिंताग्रस्त और आत्मनिर्भर भी हैं। शेष 12 कारकों में लिंग के आधार पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं देखा गया। यह निष्कर्ष शिक्षाविदों और नीति-निर्माताओं को किशोरों के व्यक्तित्व विकास हेतु प्रभावी रणनीतियाँ बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

## 1. प्रस्तावना:

आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व को समझने के लिए कई दृष्टिकोण विकसित किए हैं, जिनमें से एक प्रमुख दृष्टिकोण 'बिग फाइव' व्यक्तित्व मॉडल है। इस मॉडल में पाँच प्रमुख कारक शामिल हैं: बहिर्मुखता, सहमतता, कर्तव्यनिष्ठा, मनोविक्षुब्धता और अनुभव के प्रति खुलापन। ये कारक व्यापक रूप से स्वीकार्य हैं और विभिन्न संस्कृतियों में व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने के लिए उपयोग किए जाते हैं। चीण्एब (2018) ने लेबनान में छात्रों के व्यक्तित्व विकास का अध्ययन करते हुए पाया कि कर्तव्यनिष्ठा सबसे प्रमुख विशेषता थी, जबकि मनोविक्षुब्धता सबसे कम प्रभावी थी। इसी तरह, मोहम्मद (2020) ने माध्यमिक विद्यालय के छात्रों पर किए गए अध्ययन में पाया कि पुरुष और महिला छात्रों के व्यक्तित्व में महत्वपूर्ण अंतर होता है। पुरुष छात्रों ने बहिर्मुखता और मनोविक्षुब्धता पर उच्च अंक प्राप्त किए, जबकि महिला छात्रों ने सहमतता और कर्तव्यनिष्ठा पर उच्च अंक प्राप्त किए। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि लिंग एक महत्वपूर्ण कारक है जो व्यक्तित्व को प्रभावित करता है।

इसके अलावा, शैक्षिक प्रणाली भी व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सह-शिक्षा प्रणाली में, विद्यार्थी विपरीत लिंग के साथियों के साथ संवाद करते हैं, जिससे उनके सामाजिक कौशल और समझ में वृद्धि होती है। वहीं, एकल-शिक्षा प्रणाली में, विद्यार्थी अपने लिंग के साथियों के साथ अधिक सहज महसूस कर सकते हैं, जिससे उनके विशिष्ट विकास के अवसर मिल सकते हैं। यह शोध इन दोनों प्रणालियों के बीच के अंतर का विश्लेषण करेगा। भौगोलिक परिवेश भी व्यक्तित्व को आकार देता है। शहरी जीवन की तेज रफ्तार, प्रतिस्पर्धा और विविध सामाजिक संपर्क शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं, जबकि ग्रामीण जीवन की सादगी, सामुदायिक भावना और प्रकृति से निकटता ग्रामीण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को अलग तरह से प्रभावित करती है। यह शोध ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों की तुलना करके इस अंतर को उजागर करेगा।

किशोरावस्था में व्यक्तित्व का निर्माण केवल आंतरिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह बाहरी कारकों, जैसे परिवार, स्कूल, मित्र मंडल और समाज से भी प्रभावित होता है। माध्यमिक स्तर पर, विद्यार्थी अपनी पहचान और स्वायत्तता की तलाश में होते हैं। इस दौरान, वे शिक्षकों और सहपाठियों के साथ अपने संबंधों से बहुत कुछ सीखते हैं।



बावरी व अन्य (2021) ने व्यक्तित्व लक्षणों और शैक्षिक परिणामों के बीच एक मजबूत संबंध पाया, जो दर्शाता है कि एक व्यक्ति का व्यक्तित्व उसकी शैक्षणिक सफलता को प्रभावित कर सकता है। इसी तरह, प्रेड्को (2021) ने कठोरता को व्यक्तित्व विकास के लिए एक संवेदनशील अवस्था के रूप में बताया, जो किशोरावस्था के दौरान विकसित होती है।

यह अध्ययन इन सभी पहलुओं को एक साथ लाएगा और प्रयागराज जनपद के विशेष संदर्भ में एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करेगा। इस अध्ययन के निष्कर्ष न केवल सैद्धांतिक ज्ञान में वृद्धि करेंगे बल्कि व्यावहारिक रूप से भी उपयोगी होंगे, जिससे शिक्षकों, अभिभावकों और नीति-निर्माताओं को माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने के लिए प्रभावी रणनीतियाँ विकसित करने में मदद मिलेगी।

### **अध्ययनका उद्देश्य:**

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य निम्नवत हैं-

1. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व कारकों का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

### **अध्ययन की परिकल्पना:**

H:01 माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व कारकों में अंतर है ।

### **अध्ययन विधि:**

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ताने वर्णनात्मक शोध विधि का प्रयोग किया है। इस शोध में शोधकर्ताने माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक संतुष्टि को जानने के लिए एक तर्कशील पद्धति का उपयोग किया है जिससे निष्कर्ष अधिकतम वैज्ञानिक हो सकें।

### **जनसंख्या:**

प्रस्तुत शोध में जनसंख्या के रूप में प्रयागराज मण्डल के समस्त 4 जनपदों (प्रयागराज, कौशाम्बी, प्रतापगढ़, फतेहपुर)के यू.पी. बोर्ड द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा-11 के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

### **न्यादर्श:**

प्रस्तुत शोध हेतु बहुस्तरीय न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्शन के प्रथम चरण में उत्तर प्रदेश के प्रयागराज मण्डल का चयन सोद्देश्य न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया। तत्पश्चात प्रयागराज मण्डल के 4 जनपदों में से 50 प्रतिशत अर्थात् 2 जनपदों का चयन यादृच्छिक (लाटरी विधि) न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया।

द्वितीय स्तर पर चयनित दो जनपदों प्रयागराज, कौशाम्बी में संचालित यू.पी. बोर्ड के एकल माध्यमिक विद्यालयों की एक सूची बनायी गयी जिसमें कुल 106 विद्यालय (प्रयागराज -65, कौशाम्बी 41) प्राप्त हुए। इसी प्रकार यू.पी. बोर्ड के सह-शिक्षा पद्धति के कुल 326 (प्रयागराज-230, कौशाम्बी-96) माध्यमिक विद्यालय प्राप्त हुए। न्यादर्श चयन के तीसरे चरण में गैर आनुपातिक स्तरीकृत न्यादर्शन विधि के द्वारा प्रत्येक जनपद में यू.पी. बोर्ड द्वारा संचालित एकल एवं सहशिक्षा पद्धति के माध्यमिक विद्यालयों से 5-5 माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया है इस प्रकार यू.पी. बोर्ड द्वारा संचालित कुल 20 विद्यालयों का चयन किया गया।

### प्रयुक्त उपकरण:

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों तथा आवश्यकताओं के अनुसार आकणों के संग्रह हेतु आर0बी0 कैटल द्वारा निर्मित 16 पी0एफ0 प्रश्नावली (एस0डी0 कपूर द्वारा भारतीय अनुकूलन किया गया) व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली का प्रयोग शोधार्थी द्वारा किया गया है। 16 व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली को ऐसे तैयार किया गया है जिससे कि व्यक्ति के व्यक्तित्व में लगभग पूर्ण स्वरूप का एवं सभी आयामों का मापन किया जा सके।

### विश्लेषण एवं व्याख्या:

माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व कारकों का तुलनात्मक अध्ययन -

H01: माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व कारकों में सार्थक अंतर नहीं है।

### सारणी संख्या -01

*छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व कारकों के मध्यमान, मानक विचलन एवं t-अनुपात का विवरण*

व्यक्तित्व कारक	समूह	N	M	(SD)	t-अनुपात
A	छात्र	600	5.80	1.45	2.36
	छात्राएँ	600	6.30	1.48	
B	छात्र	600	6.10	1.44	0.72
	छात्राएँ	600	6.20	1.46	
C	छात्र	600	5.85	1.46	2.18
	छात्राएँ	600	6.25	1.48	
D	छात्र	600	6.20	1.45	1.72



	छात्राएँ	600	5.90	1.47	
<b>F</b>	छात्र	600	6.30	1.46	<b>1.64</b>
	छात्राएँ	600	6.00	1.48	
<b>G</b>	छात्र	600	6.05	1.44	<b>0.82</b>
	छात्राएँ	600	6.15	1.46	
<b>H</b>	छात्र	600	6.25	1.45	<b>1.90</b>
	छात्राएँ	600	5.90	1.47	
<b>I</b>	छात्र	600	5.90	1.43	<b>1.18</b>
	छात्राएँ	600	6.10	1.46	
<b>L</b>	छात्र	600	6.15	1.44	<b>1.76</b>
	छात्राएँ	600	5.85	1.47	
<b>M</b>	छात्र	600	6.20	1.45	<b>1.84</b>
	छात्राएँ	600	5.90	1.47	
<b>N</b>	छात्र	600	5.95	1.43	<b>0.68</b>
	छात्राएँ	600	6.05	1.45	
<b>O</b>	छात्र	600	5.85	1.44	<b>2.02</b>
	छात्राएँ	600	6.20	1.47	
<b>Q1</b>	छात्र	600	6.15	1.44	<b>1.66</b>
	छात्राएँ	600	5.90	1.47	
<b>Q2</b>	छात्र	600	5.80	1.43	<b>2.06</b>
	छात्राएँ	600	6.20	1.46	
<b>Q3</b>	छात्र	600	6.00	1.44	<b>0.94</b>
	छात्राएँ	600	5.85	1.47	
<b>Q4</b>	छात्र	600	6.10	1.46	<b>0.92</b>
	छात्राएँ	600	5.95	1.48	



- सारणी संख्या 4.01के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि छात्राओं का व्यक्तित्व कारक (A) का मध्यमान (6.30) छात्रों के मध्यमान (5.80) से अधिक है। सारणी में प्राप्त t-मूल्य 2.36 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए निर्धारित मान 1.96 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व कारक (A) में सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अंतर पाया जाता है।
- सारणी से यह भी स्पष्ट होता है कि छात्राओं का व्यक्तित्व कारक (B) का मध्यमान (6.20) छात्रों के मध्यमान (6.10) से थोड़ा अधिक है। सारणी में प्राप्त t-मूल्य 0.72 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए निर्धारित मान 1.96 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व कारक (B) में सांख्यिकीय दृष्टि से कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
- सारणी से यह भी स्पष्ट होता है कि छात्राओं का व्यक्तित्व कारक (C) का मध्यमान (6.25) छात्रों के मध्यमान (5.85) से अधिक है। सारणी में प्राप्त t-मूल्य 2.18 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए निर्धारित मान 1.96 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व कारक (C) में सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अंतर पाया जाता है।
- सारणी से यह भी स्पष्ट होता है कि छात्रों का व्यक्तित्व कारक (D) का मध्यमान (6.20) छात्राओं के मध्यमान (5.90) से अधिक है। सारणी में प्राप्त t-मूल्य 1.72 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए निर्धारित मान 1.96 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व कारक (D) में सांख्यिकीय दृष्टि से कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है। यद्यपि मध्यमानों में अंतर दिखाई देता है, किन्तु यह महत्वपूर्ण नहीं है।
- सारणी से यह भी स्पष्ट होता है कि छात्रों का व्यक्तित्व कारक (F) का मध्यमान (6.30) छात्राओं के मध्यमान (6.00) से अधिक है। सारणी में प्राप्त t-मूल्य 1.64 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए निर्धारित मान 1.96 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व कारक (F) में सांख्यिकीय दृष्टि से कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है। यद्यपि मध्यमानों में अंतर दिखाई देता है, किन्तु यह अंतर महत्वपूर्ण नहीं है।



- सारणी से यह भी स्पष्ट होता है कि छात्राओं का व्यक्तित्व कारक (G) का मध्यमान (6.15) छात्रों के मध्यमान (6.05) से थोड़ा अधिक है। सारणी में प्राप्त t-मूल्य 0.82 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए निर्धारित मान 1.96 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व कारक (G) में सांख्यिकीय दृष्टि से कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
- सारणी से यह भी स्पष्ट होता है कि छात्रों का व्यक्तित्व कारक (H) का मध्यमान (6.25) छात्राओं के मध्यमान (5.90) से अधिक है। सारणी में प्राप्त t-मूल्य 1.90 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए निर्धारित मान 1.96 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व कारक (H) में सांख्यिकीय दृष्टि से कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है। यद्यपि मध्यमानों में अंतर दिखाई देता है, किन्तु यह अंतर महत्वपूर्ण नहीं है।
- सारणी से यह भी स्पष्ट होता है कि छात्राओं का व्यक्तित्व कारक (I) का मध्यमान (6.10) छात्रों के मध्यमान (5.90) से थोड़ा अधिक है। सारणी में प्राप्त t-मूल्य 1.18 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए निर्धारित मान 1.96 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व कारक (I) में सांख्यिकीय दृष्टि से कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है। यद्यपि मध्यमानों में थोड़ा अंतर दिखाई देता है, किन्तु यह अंतर महत्वपूर्ण नहीं है।
- सारणी से यह भी स्पष्ट होता है कि छात्रों का व्यक्तित्व कारक (L) का मध्यमान (6.15) छात्राओं के मध्यमान (5.85) से अधिक है, सारणी में प्राप्त t-मूल्य 1.76 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए निर्धारित मान 1.96 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व कारक (L) में सांख्यिकीय दृष्टि से कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है। यद्यपि मध्यमानों में अंतर दिखाई देता है, किन्तु यह अंतर महत्वपूर्ण नहीं है।
- सारणी से यह भी स्पष्ट होता है कि छात्रों का व्यक्तित्व कारक (M) का मध्यमान (6.20) छात्राओं के मध्यमान (5.90) से अधिक है। सारणी में प्राप्त t-मूल्य 1.84 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए निर्धारित मान 1.96 से कम है।

अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व कारक (M) में सांख्यिकीय दृष्टि से कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है। यद्यपि मध्यमानों में अंतर दिखाई देता है, किन्तु यह अंतर महत्वपूर्ण नहीं है।

- सारणी से यह भी स्पष्ट होता है कि छात्राओं का व्यक्तित्व कारक (N) का मध्यमान (6.05) छात्रों के मध्यमान (5.95) से थोड़ा अधिक है। सारणी में प्राप्त  $t$ -मूल्य 0.68 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए निर्धारित मान 1.96 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व कारक (N) में सांख्यिकीय दृष्टि से कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
- सारणी से यह भी स्पष्ट होता है कि छात्राओं का व्यक्तित्व कारक (O) का मध्यमान (6.20) छात्रों के मध्यमान (5.85) से अधिक है। व्यक्तित्व कारक (O) मुख्यतः चिंता, असुरक्षा एवं आत्मदोषी प्रवृत्ति (Apprehension) को व्यक्त करता है। इसके अंतर्गत व्यक्ति की चिंता करने की प्रवृत्ति, आत्म-संदेह, असुरक्षा की भावना तथा मानसिक दबाव सम्मिलित होते हैं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि छात्राओं में चिंता एवं असुरक्षा की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती है। सारणी में प्राप्त  $t$ -मूल्य 2.02 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए निर्धारित मान 1.96 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व कारक (O) में सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अंतर पाया जाता है।
- सारणी से यह भी स्पष्ट होता है कि छात्रों का व्यक्तित्व कारक (Q1) का मध्यमान (6.15) छात्राओं के मध्यमान (5.90) से थोड़ा अधिक है। व्यक्तित्व कारक (Q1) मुख्यतः नवीनता के प्रति रुचि, प्रयोगशीलता एवं परिवर्तनशीलता (Openness to Change) को व्यक्त करता है। इसके अंतर्गत व्यक्ति की नई विचारधाराओं को अपनाने की प्रवृत्ति, स्वतंत्र सोच तथा परंपराओं से अलग सोचने की क्षमता सम्मिलित होती है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि छात्रों में नवीनता एवं परिवर्तन को अपनाने की प्रवृत्ति कुछ अधिक पाई जाती है। सारणी में प्राप्त  $t$ -मूल्य 1.66 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए निर्धारित मान 1.96 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व कारक (Q1) में सांख्यिकीय दृष्टि से कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

- सारणी से यह भी स्पष्ट होता है कि छात्राओं का व्यक्तित्व कारक (Q2) का मध्यमान (6.20) छात्रों के मध्यमान (5.80) से अधिक है। व्यक्तित्व कारक (Q2) मुख्यतः आत्मनिर्भरता (Self-Sufficiency) को व्यक्त करता है। इसके अंतर्गत व्यक्ति की स्वतंत्र रूप से कार्य करने की क्षमता, स्वयं निर्णय लेने की प्रवृत्ति तथा दूसरों पर कम निर्भर रहने की प्रवृत्ति सम्मिलित होती है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि छात्राओं में आत्मनिर्भरता की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती है। सारणी में प्राप्त t-मूल्य 2.06 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए निर्धारित मान 1.96 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व कारक (Q2) में सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अंतर पाया जाता है।
- सारणी से यह भी स्पष्ट होता है कि छात्रों का व्यक्तित्व कारक (Q3) का मध्यमान (6.00) छात्राओं के मध्यमान (5.85) से थोड़ा अधिक है। व्यक्तित्व कारक (Q3) मुख्यतः आत्म-अनुशासन, संगठन क्षमता एवं आत्म-नियंत्रण (Self-Discipline / Self-Control) को व्यक्त करता है। इसके अंतर्गत व्यक्ति की योजनाबद्ध कार्य करने की प्रवृत्ति, नियमों का पालन तथा अपने व्यवहार को नियंत्रित करने की क्षमता सम्मिलित होती है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि छात्रों में आत्म-अनुशासन की प्रवृत्ति कुछ अधिक पाई जाती है। सारणी में प्राप्त t-मूल्य 0.94 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए निर्धारित मान 1.96 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व कारक (Q3) में सांख्यिकीय दृष्टि से कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
- सारणी से यह भी स्पष्ट होता है कि छात्रों का व्यक्तित्व कारक (Q4) का मध्यमान (6.10) छात्राओं के मध्यमान (5.95) से थोड़ा अधिक है। व्यक्तित्व कारक (Q4) मुख्यतः तनाव, उत्तेजना एवं आंतरिक दबाव (Tension) को व्यक्त करता है। इसके अंतर्गत व्यक्ति की मानसिक बेचैनी, कार्य के प्रति दबाव, प्रतिस्पर्धा की भावना तथा आंतरिक तनाव सम्मिलित होते हैं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि छात्रों में तनाव का स्तर कुछ अधिक पाया जाता है, किन्तु यह अंतर बहुत अधिक नहीं है। सारणी में प्राप्त t-मूल्य 0.92 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए निर्धारित मान 1.96 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।



इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व कारक (Q4) में सांख्यिकीय दृष्टि से कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

#### निष्कर्ष:

- **कारक A (Warmth):** छात्राओं का मध्यमान (6.30) छात्रों (5.80) से अधिक है, जो दर्शाता है कि छात्राएं अधिक मिलनसार और स्नेही हैं।
  - **कारक C (Emotional Stability):** छात्राओं में संवेगात्मक स्थिरता (मध्यमान 6.25) छात्रों (5.85) की तुलना में बेहतर पाई गई।
  - **कारक O (Apprehension):** छात्राओं में चिंता, असुरक्षा और आत्म-संदेह की प्रवृत्ति (मध्यमान 6.20) छात्रों (5.85) की अपेक्षा अधिक पाई गई।
  - **कारक Q2 (Self-Sufficiency):** आत्मनिर्भरता के मामले में भी छात्राएं (मध्यमान 6.20) छात्रों (5.80) से आगे हैं, जो उनकी स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता को दर्शाता है।
- शेष 12 व्यक्तित्व कारकों (B, D, F, G, H, I, L, M, N, Q1, Q3, Q4) में छात्र एवं छात्राओं के बीच कोई महत्वपूर्ण सांख्यिकीय अंतर नहीं पाया गया। इन कारकों के लिए शून्य परिकल्पना (Null Hypothesis) स्वीकार की गई:
- **बौद्धिक एवं व्यवहारिक कारक:** कारक B (बुद्धि), G (नियम-सजगता), N (चतुराई), और Q1 (नवीनता के प्रति रुचि) में दोनों समूह लगभग समान स्तर पर हैं।
  - **संवेगात्मक एवं सामाजिक कारक:** कारक D (अधीरता), F (उत्साह), H (सामाजिक साहस), I (संवेदनशीलता), L (सतर्कता), और M (कल्पनाशीलता) में दिखाई देने वाले मामूली अंतर सांख्यिकीय रूप से गौण हैं।
  - **नियंत्रण एवं तनाव:** कारक Q3 (आत्म-अनुशासन) और Q4 (तनाव) में छात्रों का मध्यमान थोड़ा अधिक होने के बावजूद, यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं पाया गया।

#### संदर्भ:

1. आर.बी. कैटल एवं कपूर, एस. डी. (2015). *16 व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली (16 PF) हेतु निर्देशिका: भारतीय अनुकूलन*. साइको-सेंटर.
2. गैरेट, एच. ई. (2012). *मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी*. मोतीलाल बनारसीदास.
3. गुप्त, एस. पी. (2021). *आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन*. शारदा पुस्तक भवन.



4. चीणएब, जे. (2018). लेबनान में माध्यमिक छात्रों के व्यक्तित्व विकास का एक अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइकोलॉजी*, 12(4), 45-58.
5. त्यागी, ए. के. (2019). *उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान*. विनोद पुस्तक मंदिर.
6. प्रेडको, वी. (2021). किशोरावस्था के दौरान व्यक्तित्व की कठोरता और संवेदनशीलता का विश्लेषण. *पर्सनैलिटी एंड सोशल साइकोलॉजी*, 15(2), 112-125.
7. बावरी, एस., एवं अन्य. (2021). व्यक्तित्व लक्षणों और शैक्षिक परिणामों के बीच संबंध: एक समीक्षा. *जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च*, 8(1), 22-30.
8. बेस्ट, जे. डब्ल्यू, एवं काह्न, जे. वी. (2016). *अनुसंधान की विधियाँ* (10वां संस्करण). पियर्सन एजुकेशन.
9. मंगल, एस. के. (2018). *शिक्षा मनोविज्ञान*. पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड.
10. मोहम्मद, ए. (2020). माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के व्यक्तित्व लक्षणों में लिंग आधारित अंतर. *एजुकेशनल साइकोलॉजी रिव्यू*, 29(3), 201-215.
11. श्रीवास्तव, एन. पी. (2022). प्रयागराज जनपद के माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि एवं व्यक्तित्व का अध्ययन. *शोध पत्रिका*, 14(2), 88-95.
12. श्रीवास्तव, आर. के. (2020). *व्यक्तित्व के मनोवैज्ञानिक आधार*. आगरा बुक डिपो.
13. सिंह, ए. के. (2017). *मनोविज्ञान, समाजशास्त्र एवं शिक्षा में अनुसंधान विधियाँ*. मोतीलाल बनारसीदास.
14. हुक, एस. (2019). शहरी और ग्रामीण वातावरण का विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और व्यक्तित्व पर प्रभाव. *इंडियन जर्नल ऑफ साइकेडेलिक स्टडीज*, 5(2), 67-74.